पुलिस पर दंगाइयों की तरफ़ होने के आरोप बेबुनियाद हैं, पुलिस अब खुद दंगाई है, मौका मिलते ही साबित करेगी....

विवेक कुमार

दो रोज पहले जनसत्ता अखबार की हेडिंग पढ़ी जिसमे उत्तर प्रदेश के डीजीपी ने अपनी पुलिस को निर्देश दिए कि 'हिन्दू पांचाग और चंद्रमा की गतिविधि के मुताबिक ड्यूटी करें पुलिसकर्मी'। इसमे वे जोड़ना भूल गए कि हिन्दुत्व मानसिकता के मुताबिक ड्यूटी करें। हालांकि इसमे जोड़ने की जरूरत नहीं है, पुलिस करती वही है। जोड़ देते तो लोग नंगे होकर कह देते कि नंगई हो रही है।

नूह में दंगे हुए, हमेशा की तरह सरकार समर्थित गुंडों ने पुलिस सुरक्षा में दंगों को अंजाम देने का बीड़ा उठाया, पर इस दफा पिट गए। रोते बिलखते सरकार में बैठे अपने माई-बाप के पास गए कि इज्जत बचा लो, गुट के लौंडे इज्जत नहीं करेंगे वरना। नेता जी ने भी इन्ही के दम चुनाव लड़ना है कमाई करनी है। बस फिर क्या, पुलिस को कहा जीप से उतरो और बुलडोजर पर चढ़ जाओ। जहां मुसलमानों का घर तोड़ तोड़ा, वहां दुकान भी तोड़ दी, तोड़ते हुए याद आया, अरे दो चार सरकारी धर्म वालों के घर-दुकान भी तोड़ कर मामला निष्पक्ष दिखा दिया जाए वरना लिबरांडू मीडिया वाले कह देंगे नाइंसाफी हुई।

लिबरांडू भी कहां मानने वाले थे, पकड़ लाए मामला यूट्यूब पर और लगे बुलडोजर के पहिये में पिन घुसाने। पुलिस ने आरोप बेबुनियाद बताए, जबकि मामले की बुनियाद तो सालों से नग्न खड़ी है, ठीक नेता जी की तरह। सबने देखा कि सिस्टम नंगा खड़ा है पर ना जाने क्यों नंगे ने जिद ठान ली है कि नंगा घूमूंगा पर मानूंगा नहीं कि नंगा हूं। दंगा तो बहुत बड़ा मामला है, शर्तिया तौर पर कह सकते हैं कि हर मामले में सिस्टम नंगा ही खड़ा रहा है। क्योंकि मामला पुलिस से शुरू हुआ है तो जिसके जितने सितारे वो उतना ही बड़ा नंगा, तो शुरू करते हैं अपनी आपबीती से।

सितम्बर 22, वर्ष 2019, मैं दिल्ली में अपना छोटा सा मकान बनवा रहा था। रोज कुछ पुलिस वालों से पाला पड़ता था। इसी पाले में कुछ ने गलतफहमी में न जाने मुझे कितना बड़ा आदमी समझ लिया और अचानक एक दिन 5 गुंडे मेरे घर में सुबह । बजे घुस आए। मुझे अकेला पाकर उठा ले

गए। कहा कि हम सीबीआई से हैं। पहले तो खुद पर फक्र हुआ कि हाय यही है वो सीबीआई जिसको सुन सुन कर मैं बड़ा हुआ। थोड़ी देर तो उन पीड़ितों पर अचानक दया आने लगी कि इसी सीबीआई से अपने मामले की निष्पक्ष जांच की उम्मीद करते हैं वे? बड़े ही भोले हैं। बहरहाल, बिना नंबर की टाटा सूमो में मुझे डालकर घूंसों की बौछार शुरू हुई और फिर सवाल। पहले घूंसे का सवाल याद है, 'पुलिस के खिलाफ लिखता है? ढीशुम। थोड़ा होश आया तो पाया तथाकथित सीबीआई वाले गुड़गांव-फरीदाबाद हाइवे वाले टोल नाके पर टोल वाले को देर से गेट खोलने के लिए उसकी मां-बहन का पता पूछ रहे थे। तथाकथित सीबीआई वालों के सवालों के स्तर ने मुझे यकीन दिलाया कि ये सीबीआई तो नहीं ही हो सकती और उनकी सच्चाई हरियाणा पुलिस क्राइम ब्रांच निकली। बाद में उन्हे जो मेरे बारे में मालूम चला उसका शायद उन्हे अंदाजा नहीं था।

यहां से गाड़ी के स्टेयरिंग का कंट्रोल सबसे पीछे बैठे हुए भी मेरे हाथ आ गया। घूंसे मारने वाले सिपाही कपिल त्यागी ने अचानक मुझसे मेरे जबड़े का हाल पूछा और सबसे आगे बैठे सब इन्स्पेक्टर रविंदर से कहा 'जनाब, कदि जूस जास वी पला दया क्रो। तुरंत जूस के 6 ग्लास आए। जूस वाला मुसलमान था सो यहां से गाड़ी में चर्चा का विषय मुस्लिम धर्म बन गया। एसआई रविंदर कालांतर में काफी नामी अफसर बने और उन्होंने मेरे जैसे टुच्चे आदमी उठाने से अपना कैरियर शुरू कर सीधे दारू की दुकान के मालिक को उठाने और उसकी दुकान में डाका डालने का काम किया। इन सबके बीच अचानक कपिल की नजर रोड पर पीछे आती एक गाड़ी पर पड़ी जिसे सर्वसम्मति से रुकवा लिया गया। गाड़ी में पड़े बॉडी बिल्डिंग में इस्तेमाल होने वाले प्रोटीन के डब्बे को पुलिस का रोब दिखा कर खींच लिया गया। इन्ही सब छोटी-मोटी डकैतियों, माफ करिए पुलिस की मुस्तैद चेकिंग का हिस्सा बनता हुआ मैं सेक्टर 30 फरीदाबाद की पुलिस लाइन में पहुंचा। मुझसे कहा गया कि आराम से यहीं रहो।

कपिल ने कहा, 'हैं भई विवेक भाई, यार तुम मोदी जी के खिलाफ इतना लिखा करो हो, पुलिस के भी, यार देखो तो सही मोदी जी ने इन मुल्लों को कितना टैट किया हुआ है। इन सब बातों के बीच एक मोटा व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ और मेरे पत्रकार बुद्धि ने उसके और पुलिस की बातचीत को सुन कर ये तय किया कि ये व्यक्ति एक कार चोर है। उसने पुलिस को बताया कि कोई नया कार चोर इलाके में आ गया है जो मुस्लिम भी है। इतना सुनना था कि सबके चेहरे तमतमा गए और हिन्दू का पुलिस जाग गया। मेरी कस्टडी किसी और को सौंप कर कपिल और एक अन्य सिपाही अपना हिस्सा लेने भागे।

एक अन्य सिपाही जाखड़ ने अपने मोबाइल में एक विडिओ दिखाते हुए बताया कि कैसे मथुरा मंदिर में कृष्ण जी की शान में मोर नाच रहा है। क्योंकि कृष्ण जी भगवान हैं और उनके मंदिर के आधे हिस्से पर मस्जिद बना कर मुसलमानों ने कब्जा किया हुआ है इसलिए मुसलमानों को जिस दिन मौका आएगा काटा जाएगा।

अचानक इन सब बातों के बीच एक इन्स्पेक्टर रैंक के व्यक्ति को मालूम चला कि मेरी एक दोस्त मुस्लिम है और उनका सारा जोर इस बात पर आ गया कि क्यों न मैं उससे शादी कर लूं और उनकी एक लड़की अपने हिन्दू धर्म में ले आऊं, और अगर ऐसा न कर सकूं तो कम से कम उसके साथ संभोग तो कर ही लूं। ऐसा करने पर मैं 100 गाय दान करने के मुकाबले का काम करूंगा। इतना सुनना था कि लगभग 10 पुलिस वालों की नजर में मेरा ओहदा एक समाज सुधारक का बन गया। मुझे दिए गए खाने की रोटी और दाल में अलग से घी भी डलवाया गया और फिर सोने के लिए एसी भी चलाया गया। एक पूरा दिन रखने के बाद मुझे छोड़ दिया गया। वहां बिताए पूरे दिन में एक भी पुलिस वाला मुझे ऐसा नहीं दिखा जो संविधानपरक सोच रखता हो। बेशक वह किसी भी रैंक का पुलिस वाला था। साफ तौर पर मैंने पाया कि वे सब मानसिक रूप से सांप्रदायिक थे। उस समय मेरे मन में खयाल आया कि कहीं मैं आज मुस्लिम होता तो ये अपने खिलाफ लिखने के आरोप लगा कर मेरे साथ क्या करते?

इस घटना के बाद मुझे इसमे कोई शक नहीं रहा कि हर दंगे में पुलिस हिन्दू दंगाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पत्थर और गोलियां बरसाती है (रैफरेंस दिल्ली दंगा)। थाने में लाए जाने वाले किसी भी मुस्लिम की मौत पुलिस के मन में उसके प्रति बसी नफरत की मार से ही होती है। किसी भी मामले में मुस्लिम होना ही अपराधी होने के लिए काफी है और जिसका जीवंत उदाहरण उमर खालिद और शरजील इमाम जैसे होनहार नौजवानों को बेल तक नहीं मिलना और वहीं दूसरी तरफ़ मोनू मानेसर सरीखे अवैध उगाही और हत्या के मामले में वांछित अपराधी का गिरफ्तार तक न होना है। मैं सोचता था कि इतनी तो गाय नहीं हैं जितने अचानक से गौसेवक पैदा हो गए। फिर जब पुलिस ने यह दिव्य ज्ञान दिया तो समझ आया कि मुस्लिम लड़कियों से बलात्कार को आजकल गोदान की श्रेणी में रखा गया है। तो लाज़मी है कुंठा से भरे समाज में गौसेवक कुकुरमुत्ते की तरह पैदा होंगे ही। और अगर इसी बात के पैसे भी मिल रहे हों तो बिना नसबंदी इनकी पैदाइश भी नहीं रुकेगी। प्रेमचंद ने अपने कालजयी उपन्यास गोदान के नायक होरी के साथ अन्याय किया जो उसे इस तरह का गोदान न करने दिया।

मेरी इस सोच को जम्मू कश्मीर के भूतपूर्व पुलिस महानिदेशक एसपी वैद के ट्वीट जैसे मामलों ने और मजबूत ही किया है, जिसमे वे कहते हैं कि चंद्रयान 3 जब चांद पर उतरा तो वहां एक बोर्ड पर लिखा था कि 'यह जमीन वक्फ बोर्ड की है'। ऐसी मानसिकता का इंसान डीजीपी जम्मू कश्मीर था। इस आदमी के दिमाग में जो जहर है क्या वो मुस्लिम बाहुल्य कश्मीरी लोगों पर उगला नहीं गया होगा? इसमे क्या शक रह जाता है कि क्यों कश्मीर में शांति नहीं स्थापित होती।

दो रोज पहले एक वीडिओ देख रहा था जिसमें हिन्दुत्व का एक सिपाही कह रहा था कि उसे संविधान में यकीन नहीं, इसलिए इसे बदलने का समय आ गया। ऐसा ही करने की सलाह प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार बीबेक देबरॉय ने भी दिया। क्या शानदार उदाहरण है समानता का, जिसमे आर्थिक सलाहकार और सड़कछाप छपरी की एक ही सोच है। वैसा देखा जाए तो बात सही ही कह रहा है, यकीन होगा भी किसे? अनुच्छेद 14, कानून के समक्ष सबको समान मानता है जबकि कानून लागू करवाने वाला हवलदार अगले ही पल अपने डंडे से इसकी व्याख्या कर देता है।

पर एक मिनट, मैं यह सब क्यों लिख रहा हूं? क्या मैंने आपको कोई नई बात बता दी जो आपको मालूम नहीं थी। क्या आप नहीं जानते कि नंगा एकदम नंगई पर उतारू है? और नहीं जानते तो आप भी उतने ही नंगे हैं। संविधान और लोकतंत्र खतरे में है जैसी लफ्फाजी का अब कोई मतलब नहीं। खतरे में मुसलमान है, और दूसरी पंक्ति में खड़े बाकी भी तभी तक खुद को सुरक्षित महसूस करें जब तक पहली लाइन में खड़ा मुसलमान गिर नहीं जाता।

क्या देश की जनता मोदी के दावे पर यक़ीन करना चाहेगी ?

श्रवण गर्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस समय 15 अगस्त के ऐतिहासिक अवसर पर दिए गए अपने डेढ़ घंटे के उस भाषण को लेकर सबसे ज़्यादा चर्चा में हैं जो आने वाले वक्त में देश के भविष्य को लेकर नया इतिहास रच सकता है ! नेत्रहीन व्यक्तियों और हाथी की प्रचलित कहानी की तरह ही भक्तों, अंध-भक्तों और आलोचकों के झुंड इस समय भाषण के अलग-अलग अंशों को छूते हुए प्रधानमंत्री के असली इरादों की तह में जाने की कोशिशों में जुटे हैं। इस तरह की कोशिशें पहले नहीं देखी गईं।

प्रधानमंत्री के तौर पर मोदी का लाल क़िले से यह दसवां और उनके दूसरे कार्यकाल का अंतिम भाषण था। उनके सभी भाषणों का औसत लगभग डेढ़ घंटा रहा है। अत: कहा जा सकता है कि उन बदनसीब मुग़लों द्वारा बनाई गई ऐतिहासिक इमारत से, जिनके कि इतिहास वर्तमान सत्ता द्वारा ही जलाए जा रहे हैं, प्रधानमंत्री ने पिछले दस सालों में लगभग हज़ार मिनिटों के संबोधन देश की जनता के नाम किए होंगे!

प्रधानमंत्री को उनके अब तक के कार्यकाल में केवल दो अवसरों पर सबसे ज़्यादा चर्चा में रहते हुए पाया गया है। पहला तो तब जब वे देश के हितों को प्रभावित कर सकने वाली बड़ी से बड़ी घटना पर भी लंबा मौन साध लेते हैं। दूसरा तब जब वे किसी अहम मौक़े पर भी इस तरह की रहस्यमय प्रतिक्रिया देते हैं कि उनके कहे के निहितार्थ को डीकोड करना मनोवैज्ञानिकों के लिए भी चुनौतीपूर्ण काम हो जाता है। पहली श्रेणी में चीन द्वारा लद्दाख में तीन साल पहले किए गए अतिक्रमण और हाल की मणिपुर की घटना को रख सकते हैं। दूसरी में लाल क़िले से पंद्रह अगस्त को दिये गए उनके उद्बोधन को। चीन द्वारा कथित तौर पर हथिया लिए गए हमारे दो हज़ार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को लेकर पीएम द्वारा जून 2020 में दी गई एकमात्र प्रतिक्रिया ही अभी तक उपलब्ध है कि-'न तो कोई घुसा था, न घुसा है और न घुसेगा।' लाल क़िले से उद्बोधन में उनके नेतृत्व में किए गए सामरिक महत्व की उपलब्धियों के बखान के दौरान भी प्रधानमंत्री ने यह तो बताया कि सीमा क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण किया गया है पर चीनी घुसपैठ और उससे मुक़ाबले के लिए सड़कों के उपयोग का कोई ज़िक्र नहीं किया। दुनिया को जानकारी है कि मणिपुर में चार मई को हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर बीस जुलाई को पीएम ने छत्तीस सैकेंड की क्या प्रतिक्रिया दी थी!

लाल क़िले से दिये गए नब्बे मिनट के भाषण और उसमें अब तक के 'मेरे प्यारे भाइयों और बहनों' के स्थान पर पचास से अधिक बार इस्तेमाल किए गए शब्द 'मेरे प्रिय परिवारजनों' का एक पंक्ति में सार यही समझाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री देश को इस हक़ीक़त से सामने के लिए तैयार कर रहे थे कि अगले साल भी वे ही झंडा फहराने वाले हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के इस तंज को ज़्यादा गंभीरता से नहीं लिया जा सकता कि मोदी अगले साल झंडा अपने घर में फहराएंगे। ऐसा इसलिए कि मोदी ने अब सत्ता को ही अपना स्थायी निवास मान लिया है।

अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान लोकसभा के मंच का उपयोग चुनावी भाषण के लिए कर लेने के बाद लाल क़िले की प्राचीर से भी जनता को इस आशय का संदेश देने कि अगले पांच सालों के लिए उन्हें फिर से सत्ता में आने से रोका नहीं जा सकता, मोदी आख़िर क्या संकेत देना चाहते हैं? क्या वे विपक्ष के साथ-साथ जनता को भी किन्हीं अज्ञात परिणामों को लेकर सचेत या भयभीत करना चाह रहे हैं? कर्नाटक विधान सभा के चुनावों के दौरान गृहमंत्री ने वहां के मतदाताओं को कथित तौर पर आगाह किया था कि अगर भाजपा को सत्ता में नहीं लौटाया गया तो राज्य को प्रधानमंत्री का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होगा। कर्नाटक की जनता ने गृहमंत्री के कहे की परवाह नहीं की!

सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री और उनके करीब की जमात ने ऐसा महसूस कर लिया है कि मौजूदा नेतृत्व से जनता का मोहभंग हो चुका है? पश्चिम बंगाल, पंजाब, हिमाचल और कर्नाटक विधान सभाओं के चुनाव परिणाम उसके प्रमाण भी हैं । 26 मई 2014 के दिन 'ग़रीब चाय वाले के बेटे' की जिस छवि के साथ सार्क देशों के शासन प्रमुखों की मौजूदगी में मोदी ने राष्ट्रपति भवन के विशाल प्रांगण में पद की शपथ थी और जिस तिलिस्म को 2019 में भी अनेकानेक उपायों से जीवित रखा था क्या वह 2024 के पहले टूट चुका है?

कोई तो कारण रहा होगा कि 2014 और 2019 के दौरान के सभी प्रमुख सहयोगी दलों ने एनडीए का साथ छोड़ दिया है ! राज्यों के वरिष्ठ नेता भाजपा का साथ छोड़ कांग्रेस और दूसरे दलों के दामन थाम रहे हैं ! सारे संकेत इसी एक हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करते हैं कि विपक्षी दलों के बाद अब जनता ने भी डरना बंद किया है और यह सब सत्तारूढ़ दल के नेताओं की क्रोध भरी मुद्राओं में व्यक्त भी हो रहा है !

लोकसभा से लाल क़िले तक के भाषणों से प्रधानमंत्री का जो स्वरूप प्रकट हुआ है वह जनता की चुप्पी से विचलित होते हुए नरेंद्र मोदी का है। प्रधानमंत्री ने भांप लिया है कि कन्याकुमारी से कश्मीर के बाद गुजरात से मेघालय तक की प्रस्तावित दूसरी 'भारत जोड़ो यात्रा' के बाद राहुल गांधी को आगे बढ़ने से रोक पाना और भी मुश्किल होने वाला है! पिछले नौ सालों के दौरान सत्ता के इर्द-गिर्द काई की तरह जमा हो गए निहित स्वार्थों के समूहों ने अब वर्तमान व्यवस्था को बनाए रखने के लिए संविधानेतर तरीक़ों की मदद लेने के लिए प्रधानमंत्री को उकसाना प्रारंभ कर दिया है। इन तरीक़ों में यह भी शामिल है कि वर्तमान संविधान अपनी उम्र और ज़रूरत पूरी कर चुका है। अत: एक नये संविधान की देश को ज़रूरत है। इस ज़रूरत के संकेत तीन साल पहले ही तब मिल गए थे जब नीति आयोग के एक उच्चाधिकारी ने सार्वजनिक रूप से कह दिया था कि देश में लोकतंत्र ज़रूरत से ज़्यादा है और इस कारण विकास बाधित हो रहा है।

अंत में सवाल यह है कि तमाम कोशिशों के बावजूद अगर एनडीए बहुमत प्राप्त कर पाने में विफल साबित हो जाता है तो क्या मोदी लोकतांत्रिक तरीक़ों से सत्ता-हस्तांतरण के लिए राज़ी हो जाएंगे? लाल क़िले की प्राचीर से किए गए प्रधानमंत्री के इस दावे पर कि अगले साल भी तिरंगा वे ही फहराएंगे,अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध अख़बार 'द टेलीग्राफ' की ख़बर का शीर्षक था : 'चुनाव आयोग आराम करे, मोदी ने 2024 के नतीजे सुना दिए हैं!' क्या देश की जनता मोदी के महत्वाकांक्षी दावों पर यक़ीन करना चाहेगी?